

# THE OXFORD COLLEGE OF SCIENCE HINDI ASSIGNMENT

Submitted By:

AAQIB GOUHER  
BSC SMC 291 (2<sup>nd</sup> Year)

Submitted To:

DR. SURESH RATHOD  
Assistant Professor of Hindi.

# सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ सं०
1.	क्या है ग्लोबल वार्मिंग	01-02
2.	कारण	02-03
3.	छातक परिणाम	03-03
4.	जागरूकता	03-04
5.	ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन	04-05
6.	ग्लोबल वार्मिंग पर यू.एन. वर्तिका	05-07
7.	ग्लोबल वार्मिंग रोकने के उपाय ।	07-07

शिक्षक हस्ताक्षर





# ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग या वैश्विक तापमान बढ़ने का मतलब है कि पृथ्वी लगातार गर्म होती जा रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि आने वाले दिनों में सूखा बढ़ेगा, बाढ़ का घटनाएं बढ़ेंगी और मौसम का मिजाज पूरी तरह बदला हुआ दिखेगा।

## क्या है- ग्लोबल वार्मिंग ?

आमान शब्दों में समझें तो ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है 'पृथ्वी के तापमान में वृद्धि और इसके कारण मौसम में होने वाले परिवर्तन'। पृथ्वी के तापमान में हो रही इस वृद्धि के परिणाम स्वरूप बारिश के तरीकों में बदलाव, हिमखण्डों और ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और वनस्पति तथा जन्तु जगत पर प्रभावों के रूप में सामने आ सकते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग दुनिया की कितनी बड़ी समस्या है, यह बात एक आदमी नहीं समझ पाता है। उसे ये शब्द थोड़ा दूरिन्विकल लगता है। इसलिये वह इसकी तह तक नहीं जाता है। लिहाजा इसे एक वैज्ञानिक परिभाषा मानकर छोड़ दिया जाता है। ज्यादातर लोगों को लगता है कि फिलहाल संसार को इससे कोई खतरा नहीं है।

भारत में भी ग्लोबल वार्मिंग एक प्रचलित शब्द नहीं है और भाग-दौड़ में लगे रहने वाले भारतीयों के लिए भी इसको अधिक कोई

कोई मतलब नहीं है। लेकिन विज्ञान की दुनिया की बात करें तो ग्लोबल वार्मिंग को लेकर आविष्कारों की जा रही है।

# कारण

ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के लिए अधिक निम्नोष्ण ग्रीन हाउस गैसों जैसे ग्रीन हाउस गैसों, वे गैसी होती हैं जो बाहर से मिल रही गर्मी या ऊष्मा को अपने अंदर सोख लेती हैं। ग्रीन हाउस गैसों का इस्तेमाल आमाम्यतः अत्यधिक सड़क इलाकों में उन पौधों को गर्म रखने के लिए किया जाता है जो अत्यधिक सड़क मौसम में खराब हो जाती हैं। ऐसे में इन पौधों को काँच के एक बंद घर में रखा जाता है और काँच के घर में ग्रीन हाउस गैसों भर दी जाती हैं। यह गैस सूरज से आने वाली किरणों को गर्मी सोख लेती है और पौधों को गर्म रखती है। ठीक यही प्रक्रिया पृथ्वी के साथ होती है। सूरज से आने वाली किरणों को गर्मी की कुछ मात्रा को पृथ्वी द्वारा सोख लिया जाता है। इस प्रक्रिया में हमारे पर्यावरण में फैली ग्रीन हाउस गैसों का महत्वपूर्ण योगदान है। अगर इन गैसों का अस्तित्व हमारे में न होता तो पृथ्वी पर तापमान वर्तमान से काफी कम होता।

ग्रीन हाउस गैसों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण गैस कार्बन डाइ-ऑक्साइड है, जिसे हम जीवित प्राणी अपने साँस के साथ उत्सर्जित करते हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में पृथ्वी पर  $CO_2$  गैस की मात्रा लगातार बढ़ी है। वैज्ञानिकों द्वारा  $CO_2$  के उत्सर्जन और तापमान बढ़ने और में गहरा सम्बंध बताया जाता है। सन् 2006 में एक डॉक्यूमेंटरी फिल्म आई - 'द इन्कविनिटेड हरिथ'। यह डॉक्यूमेंटरी फिल्म तापमान बढ़ने और  $CO_2$  पर केंद्रित थी। इस फिल्म





में मुख्य भूमिका में थे - अमेरिकी उपराष्ट्रपति 'अले' गोर (और इस फिल्म को निर्देशन 'डोविड गुरु-हंग' ने किया था) इस फिल्म में ग्लोबल वार्मिंग को एक विभीषिका की तरह दर्शाया गया, जिसका प्रमुख कारण मानव गतिविधि जनित कार्बन डाई ऑक्साइड गैस माना गया। इस फिल्म को सम्पूर्ण विश्व में बहुत सराहा गया और फिल्म को 'सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंटरी' का ऑस्कर अवार्ड भी मिला।

## घातक परिणाम

ग्रीन हाउस गैस को गैस होती है जो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश कर यहाँ का तापमान बढ़ाने में कारक बनती है। वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों को उत्सर्जन अगर इसी प्रकार चलता रहा तो 21 वीं शताब्दी में पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत घातक होंगे। दुनिया के कई हिस्सों में बिछी बर्फ की चादरें पिघल जाएंगी, समुद्र का जल स्तर कई फीट ऊपर तक बढ़ जाएगा। समुद्र के इस वृद्धि से दुनिया के कई हिस्से जलमग्न हो जाएंगे। भारी तबाही मचेंगी। यह तबाही किसी विश्वविद्व या किसी 'एस्टेरॉड' के पृथ्वी से टकराने के बराबर होने वाला तबाही से भी बढ़कर होगी। हमारे ग्रह पृथ्वी के लिये भी यह स्थिति बहुत हानिकारक होगी।

## जागरूकता

ग्लोबल वार्मिंग को रोकने का कोई इलाज नहीं है। इसके बारे में सिर्फ जागरूकता फैलाकर ही इससे लड़ा जा सकता है। हमें अपनी पृथ्वी को सही मायनों में 'ग्रीन' बनाना होगा। अपने कार्बन फुटप्रिंट्स (प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन को मापने का पैमाना)

को कम करना होगा।

हमें अपने आस-पास के वातावरण को प्रदूषण से जितना मुक्त रखेंगे, इस पृथ्वी को बचाने में उतनी ही बड़ी भूमिका निभाएंगे।

## ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन

माना जा रहा है कि इसकी वजह से उष्णकटिबंधीय रेगिस्तानों में नमी बढ़ेगी। मैदानी इलाकों में भी इतनी गर्मी पड़ेगी जितनी कभी इतिहास में नहीं पड़ी। इस वजह से विभिन्न प्रकार की जानलेवा बीमारियाँ पैदा होंगी। हमें ध्यान में रखना होगा कि हम प्रकृति को इतना नाराज न कर दें कि वह हमारे अस्तित्व का खतम करने पर ही आमादा हो जाए। हमें इन सब बातों का ख्याल रखना पड़ेगा।

आज हर व्यक्ति पर्यावरण की बात करता है। प्रदूषण से बचाव के उपाय सोचता है। व्यक्ति स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण में रहने के अधिकारों के प्राप्ति सज्ज होने लगा है और अपने दायित्वों को समझने लगा है। वर्तमान में विश्व ग्लोबल वार्मिंग के सवाल से जूझ रहा है। इस सवाल को जवाब जानने के लिए विश्व के अनेक देशों में वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग और खोजें हुई हैं। उनके अनुसार अगर प्रदूषण फैलने की रफतार इसी तरह बढ़ती रही तो अगले दो दशकों में धरती का औसत तापमान 0.3 डिग्री सेल्सियस प्राप्ति दशक के दर से बढ़ेगा। जो चिंताजनक है।

तापमान की इस वृद्धि से विश्व के सारे जीव-जन्तु बेहाल हो जाएंगे और उनका जीवन खतरे में पड़ जाएगा। पेड़-पौधों में भी इसी तरह का बढ़ताव आएगा। सागर के आस-पास रहने वाली आबादी पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ेगा। जल स्तर अपर 30% के कारण सागर तट पर बसे ज्यादातर शहर इन्हीं





सागरों में समा जाएंगे। हाल ही में कुछ वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि जलवायु में बिगाड़ का सिमासिमा इसी तरह जारी रहा तो कुपोषण और विषाणु जनित रोगों से होने वाली मौतों की संख्या में गरीबी बढ़ती हो सकती है।

इस पारिस्थितिक संकट से निपटने के लिये मानव को सचेत रहने की जरूरत है। दुनिया भर की राजनीतिक शक्तियाँ इस बहस में उलझी हैं कि गर्मी, धरती के लिये किसे जिम्मेदार ठहराया जाए। अधिकतर राष्ट्र यह मानते हैं कि उनकी वजह से जलवायु बर्बाद नहीं हो रही है। लेकिन सब यह है कि इसके लिये कोई भी जिम्मेदार है, भुगतान सबका है। यह बहस जारी रहेगी लेकिन ऐसी कई छोटी पहलें हैं जिनसे अगर हमें शुरू करें तो धरती को बचाने में बड़े भर योगदान कर सकते हैं।

## ग्लोबल वार्मिंग पर यू.एन. वार्ता

संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों में 2015 तक गई जलवायु संधि कराने के लिये बहला कदम उठाया है। और इस पर वातचीत शुरू की है कि वे किस तरह इस लक्ष्य को पूरी करेंगे। यह संधि विकास और विकासशील देशों पर लागू होगी।

संयुक्त राष्ट्र के प्रेसवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यू.एन. स्फ. सी.सी.सी.) पर दस्तखत करने वाले 195 देशों ने कानून में इस बात पर बहस शुरू की है कि पिछले साल दिसंबर में डरबन सम्मेलन में तय लक्ष्य पाने के लिए वह किस तरह काम करेंगे। उद्घाटन समारोह को अध्यक्षता करने वाली दाक्षिणा अफ्रीका की माइते रनकोआना म्बाबे ने सदस्य देशों से वार्ता के पुराने और नकारा तरीकों को छोड़ने की अपील की। उन्होंने समुद्र के बढ़ते जल स्तर की वजह से डूबने का संकट झेल रहे छोटे देशों

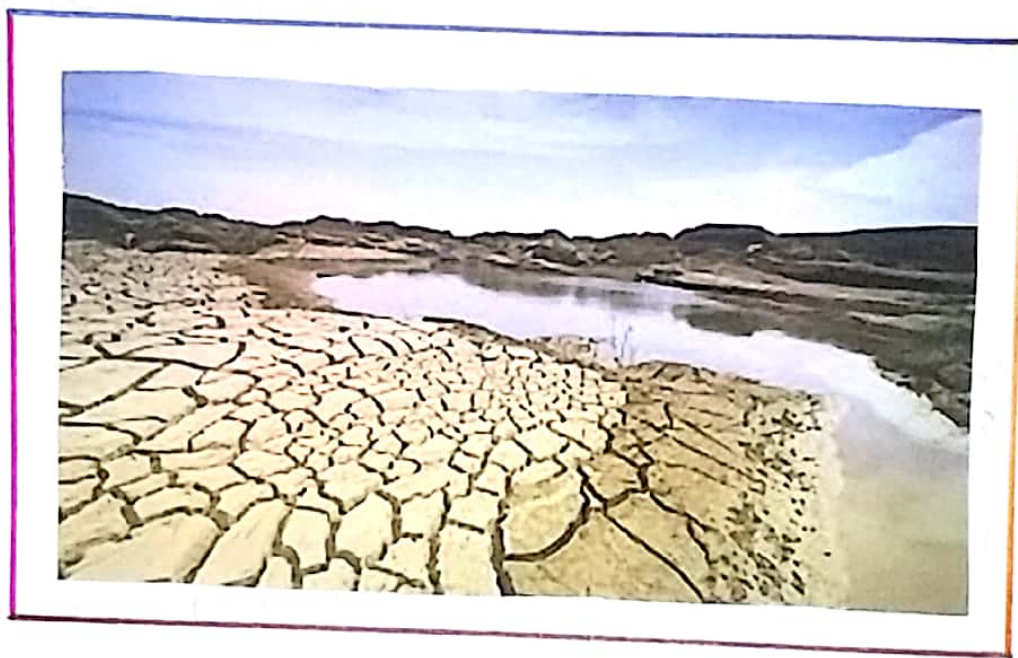
का जिकर करते हुए कहा, 'समय कम है और हमें अपने कुदृष्ट भाइयों, खासकर छोटे द्वीपों वाले देशों की अपील को गम्भीरता से लेना है।'

जर्मनी की फ्रान्की राजधानी बॉन में आयोजित सम्मेलन के अनुसार 2015 तक नई संधि पूरी हो जाएगी और उसे 2020 से लागू कर दिया जाएगा। इससे गरीब और अमीर देशों को ग्लोबल वार्मिंग रोकने के लिये और जहरीली गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए एक ही कानूनी ढाँचे में रखा जाएगा। इस समय संयुक्त राष्ट्र के तहत विकसित और विकासशील देशों के लिए पर्यावरण सुरक्षा सम्बंधी अलग-अलग कानूनी नियम हैं।

आलोचकों का कहना है कि ये नियम अब समय के अनुसार नहीं हैं। ग्लोबल वार्मिंग के लिये ज्यादातर ऐतिहासिक जिम्मेदारी अमीर देशों की है, लेकिन उनका कहना है कि आवेदन में समस्या को सुलझाने का बोझ उन पर डालना अनुचित होगा। इस बीच सबसे ज्यादा जहरीली गैसों का उत्सर्जन गैसों का उत्सर्जन करने वालों की सूची में चीन, भारत और बांग्लादेश जैसे देश शामिल हो जा रहे हैं जो अपनी आबादी को गरीबी को बाहर निकालने के लिये कोयला, तेल और गैस का व्यापक इस्तेमाल कर रहे हैं। हालांकि, अभी भी प्रति व्यक्ति औसत स्वतंत्र पश्चिमी देशों से कम है।

समुद्र में बसे छोटे देशों और अफ्रीकी देशों ने चेतावनी देते हुए कहा कि गैसों के उत्सर्जन में कटौती के वायदों और ग्लोबल वार्मिंग रोकने के लिए उसकी जरूरत के बीच बड़ा खाई है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि वर्तमान उत्सर्जन जारी रहता है तो दुनिया का तापमान पाँड़री सेलसियस बढ़ जाएगा, जबकि यू.एन.एफ.सी.सी.सी. ने 2011 में 2 डिग्री सेलसियस को सुरक्षित अधिकतम प्राप्ति बताया है।





यू.एन.एफ.सी.सी.सी ने सिर्फ इतना तय किया है कि उसे साझा लोकेशन अगो-अगो, जिम्मेदारी तय करनी है। इसका मतलब है कि गरीब और अमीर अर्थव्यवस्थाओं पर अगो-अगो बोझ डाला जाएगा। 2015 तक जिन्हे मुद्दे पर फैसला किया जाना है, वह यह है कि कौन देश कितनी कटौती करेगा, सौदे का लागू करने की संरचना क्या होगी, उसका कानूनी दर्जा क्या होगा।

विकासशील देश विकसित औद्योगिक देशों से सहायता दिखाने की मांग कर रहे हैं। वे यूरोपीय संघ से ब्याटी सौदे के वायदों को फिर से दोहराने की अपील कर रहे हैं। वे यूरोपीय संघ से ब्याटी सौदे के वायदों को फिर से दोहराने की अपील कर रहे हैं। वह अकेली सौदे है जिसमें ग्रीन हाउस गैसों में कटौती तय की गई थी। इसके विपरीत ब्याटी को पास करने वाला अमेरिका उभरते देशों से कटौती के अपने वायदों को बढ़ाने की मांग कर रहा है। आने वाले विवादों को संकेत देते हुए ग्रीन क्लाइमेट फंड की पहली बैठक स्थापित कर दी गई है। इसका गठन गरीब देशों की मदद के लिए 10 अरब डॉलर जमा करना है।

## ग्लोबल वार्मिंग रोकने के उपाय

वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग में कमी के लिए मुख्य रूप से सी.एफ.सी. गैसों का उत्सर्जन रोकना होगा और इसके लिए फ्रिज, एयर कंडीशनर और दूसरे कूलिंग मशीनों का इस्तेमाल कम करना होगा या ऐसी मशीनों का उपयोग करना होगा जिससे सी.एफ.सी. गैसों कम निकलती हों।

औद्योगिक इकाइयों की चिमनियाँ से निकलने वाला धुआँ हानि-कारक है और इससे निकलने वाला  $CO_2$  गैसीय बढ़ाता है। इन इकाइयों में प्रदूषण रोकने के उपाय करने होंगे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।